दिल्ली के दरबार में

आचार्य विजय रत्नसुंदरसूरि

११

बच्चों को यौन शिक्षा देने के लिए सर्वाधिक योग्य माता-पिता स्वयं हैं और यह शिक्षा माता-पिता ही सर्वोत्तम रूप से प्रदान कर सकते हैं

विश्व विख्यात सेक्सोलोजीस्ट डॉ. प्रकाश कोठारी के साथ जैनाचार्य श्री रत्नसुंदरसूरिजी का विचार-विमर्श ।

आचार्य महाराज : मैं जब दिल्ली आया तब कोई निश्चित उद्देश्य मेरे पास नहीं था पर यहाँ आने के बाद सबके साथ मिलकर मांस निर्यात (मीट एक्सपोर्ट) को बंद करने के लिए प्रयास आरंभ किए। परंतु एक दिन मैंने टाईम्स ऑफ इंडिया में पढ़ा कि 'Sex Education will start from kinder garten', यह पढ़कर मैं तो स्तब्ध हो गया ! इसके पश्चात मैंने इस विषय का गहराई से अध्ययन आरंभ किया और विश्व के अन्य देशों में इस शिक्षा के अनुभवों का गहन मूल्यांकन किया। इस संपूर्ण अध्ययन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि किसी भी स्थिति में इस तरह की शिक्षा बालकों को नहीं दी जानी चाहिए।

पश्चिमी देशों में इस शिक्षा के भयंकर दुष्परिणाम आये हैं। इन देशों में किशोरावस्था में गर्भधारण (टीन एज प्रेगनेंसी), समूह सेक्स, समलैंगिक सेक्स इत्यादि जैसी प्रवृत्तियों में बेतहाशा वृद्धि हुई है। आज इन देशों की दशा इस हद तक खराब हो गयी है कि वहाँ कि सरकारों को स्कूल में ही गर्भपात केन्द्र खोलने पड़े हैं ! ये सब परिणाम देखकर में भीतर से पूरी तरह विचलित हो गया। जरा सोचिए कि ऐसी प्रवृत्तियां यदि भारत में पनपती हैं तो भारत की क्या दुर्दशा होगी !

भारत की तो पहचान ही मर्यादा, नैतिकता, पवित्रता और आध्यात्मिकता के ऊपर आधारित है। ऐसे महान देश में व्यभिचार की यह शिक्षा तो प्रलय ला देगी। क्या आप इस बात को स्वीकार करते हो कि एक सामान्य भारतीय परिवार अपनी १२ साल की लड़की को कुंवारी होने के बावजूद गर्भवती होते हुए देख सकेंगे ?

मैं आपको पूरे आग्रह के साथ यह कहना चाहता हूँ कि इस देश की सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था और नैतिक व्यवस्था स्पष्ट व पूर्ण रुप से इस तरह की शिक्षा को नकारती है। मैं यहाँ पर मुस्लिम समाज, ईसाई समाज, सिक्ख समाज इत्यादि सभी समुदायों के अग्रणी धर्मगुरुओं से मिला तथा उनसे इस बारे में बातचीत की। उन सभी का यही मानना है कि यदि स्कूलों में यौन शिक्षा दी जाएगी तो इसके विनाशकारी परिणाम सामने आयेंगे। प्रकाशजी, आप तो भारतीय मूल्यों और संस्कारों से परिचित हैं ही। क्या आपको लगता है कि इस देश में यौन शिक्षा दी जानी चाहिए ?

श्री प्रकाशजी : महाराज साहब, आपने जो कुछ भी कहा है उन सभी का सही उत्तर मेरे पास है और मैं स्पष्ट रुप से मानता हूँ कि भारत में यौन शिक्षा दी जानी चाहिए। आज जिस तरह से भारत की जनसंख्या बढ़ रही है तथा जिस तरह

से एड्स का प्रसार हो रहा है, उसे नियंत्रित करने का एक मात्र उपाय यौन शिक्षा है।

हाँ, आज से १०० साल पहले इसकी जरुरत नहीं थी परंतु आज है क्योंकि १०० साल पहले १३-१४ वर्ष की आयु में ही विवाह हो जाते थे। ये नहीं करना है, वो नहीं करना है, किसी के साथ घूमने नहीं जाना है इत्यादि नियमों का पालन कुछ ही सप्ताह या महीनों तक करना पड़ता था और उसके बाद व्यक्ति का विवाह कर दिया जाता था।

मैं यहाँ पर मुस्लिम समाज, ईसाई समाज, सिक्ख समाज इत्यादि सभी समुदायों के अग्रणी धर्मगुरुओं से मिला तथा उनसे इस बारे में बातचीत की। उन सभी का यही मानना है कि यदि स्कूलों में यौन शिक्षा दी जाएगी तो इसके विनाशकारी परिणाम सामने आयेंगे।

आज लोग २० से ३० साल की आयु के बीच विवाह करते हैं। थोड़े सप्ताह या महीनों के लिए ऐसे नियमों का पालन संभव है परंतु १०-१५ साल ऐसे नियमों का कठोर रुप से पालन सामान्य मनुष्य के लिए संभव नहीं है। इसके फलस्वरुप अनैच्छिक गर्भधारण और एड्ज जैसी खतरनाक बीमारी में जबरदस्त वृद्धि हो रही है। यौन शिक्षा इसका एक मात्र उपाय है। हालाँकि यौन शिक्षा का तात्पर्य यह नहीं हैकि हमें लोगों को यह सीखना है जो वे नहीं जानते बल्कि यौन शिक्षा का मतलब यह है कि हमें सभी को उस तरीके से व्यवहार करना सिखाना है जिस तरीके से वे व्यवहार नहीं करते।

आचार्य महाराज : एड्स के बारे में जिस तरह से दुष्प्रचार किया जा रहा है और एड्ज के आंकड़ो के संबध में भ्रम फैलाये गये हैं वो अत्यंत दु:खद और अफसोसजनक है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के अनुसार १९८६ से २००६ के दौरान कुल १,२४,९७० व्यक्ति एड्स के कारण मृत्यु का शिकार हुई है। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में प्रति वर्ष ५ लाख बच्चे डायरिया से और नौ लाख लोग कैन्सर से मृत्यु का शिकार होते हैं। अब आप ही बतलाइये कि एड्स महामारी है या डायरिया व कैन्सर ? इसके अतिरिक्त आप यौन शिक्षा का यह पाठ्यक्रम देखिए। कया आप इस बात से सहमत है कि यह अति-अश्लील पाठ्यक्रम स्कूलों में पढ़ाया जाए ?

श्री प्रकाशजी : यह मैंने नहीं पढ़ा है और इसके निर्माण में मेरा कोई योगदान नहीं है। मैं यौन शिक्षा का हिमायती हूँ परंतु इसके साथ-साथ मैं बलपूर्वक यह भी कहना चाहता हूँ कि यौन शिक्षा, सांस्कृतिक मर्यादा की सीमा में रहकर ही दी जानी चाहिए। यह शिक्षा माता-पिता और घर के बड़े अभिभावक ही सर्वोत्तम रुप में प्रदान कर सकते हैं। ऋषि वात्स्यायन का भी यही दृष्टिकोण था। ऋषि की वाणी भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों के लिए सत्य मानी जाती है। इसके साथ-साथ यह भी कहना चाहूँगा कि एक अच्छी माता सौ शिक्षकों से भी बढ़कर है।

आचार्य महाराज : प्रकाशभाई, आज हम किसी शराबी को बस के ड्राइवर की सीट पर बैठने नहीं देते। किसी अपराधी को न्यायाधीश नहीं बनाया जाता। क्योंकि हमें पता है कि ये शराबी और अपराधी कार्य को संपादित करने के स्थान पर कार्य को बरबाद कर देंगे। **यदि योग्यता का ध्यान इतना ही रखा जाता है तो फिर उस व्यक्ति की योग्यता क्या रखी गयी है जो व्यक्ति बच्चों को यह शिक्षा प्रदान करेगा ? क्या वह सदाचारी होगी ? क्या वह पवित्र और ब्रह्मचारी होगा ? क्या उसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली होगी ? यौन शिक्षा का विषय अति-संवेदनशील विषय है और इस विषय को पढ़ाने वाले व्यक्ति के पास ये सभी योग्यता तो होनी ही चाहिए।**

श्री प्रकाशजी : महाराज साहब, मैंने आपको अभी-अभी यह बतलाया कि यह विषय सांस्कृतिक मर्यादा में ही पढ़ाया जाएगा केवल तभी ही इस विषय का उद्देश्य हासिल हो पाएगा। मैं स्वयं इस विषय पर लेक्चर देता हूँ और लेक्चर में इस मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखता हूँ। इसीलिए तो मेरे लेक्चर में दादा-पिता-पुत्र और पौत्र चारों पीढ़ी नि:संकोच होकर इस विषय को सुनने व समझने के लिए बैठती हैं।

मैं स्वयं स्वीकार करता हूँ कि इस विषय को पढ़ाने के लिए निश्चित व विशिष्ट योग्यता होनी आवश्यक है। मैं यह नहीं कहता कि यह विषय केवल डॉक्टर ही पढ़ा सकते हैं। **आपको मैं एक बात दुबारा कहना चाहूँगा कि यौन शिक्षा देने के लिए माता-पिता ही सर्वाधिक योग्य है और वे ही यह शिक्षा उत्तम तरीके से प्रदान कर सकते हैं।**

हाँ, मैंने इस पाठ्यक्रम नहीं है पर पन्नों पर नजर डालता हूँ तो ऐसा अवश्य लगता है कि इसमें सुधार की आवश्यकता है।

यौन शिक्षा कौन दे ? कब दे ? और किस तरह दे ? इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखकर ही यौन शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ा जाना चाहिए।

सरकार द्वारा बनाया गया यौन शिक्षा का यह पाठ्यक्रम आप मुझे प्रषित कर देना। मैं इसका मूल्यांकन करना चाहता हूँ और इसके बाद ही मैं इस पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करूँगा।

आचार्य महाराज : अभी ऐसी बातें उठ रही है कि यौन शिक्षा का यह वापिस ले लिया जाएगा तथा बिलकुल नया लाया जाएगा। यदि शायद ऐसा कोई नया लाया जाएगा तो उसके मूल्यांकन की जिम्मेदारी लेने के लिए आप तैयार हैं ?

श्री प्रकाशजी : महाराज साहब, यदि आपके नेतृत्व में यह कार्य करने के लिए मुझे कहा जाएगा तो मैं अवश्य यह कार्य करूँगा अन्यथा मेरी ऐसी कोई तमन्ना नहीं है।

Prakash Kothari MBBS PhD
Founder Member
Advisory Committee
World Association for Sexology (WAS)
Founder Professor & head
Department of Sexual Medicine, G. S. Medical College & K.E.M. Hospital
Founder President
Indian Association of Sex Educatiors, Counsellors & Therapists

પૂ. વિજય રત્નસુંદરસૂરિ મહારાજ સાહેબ,

આપનો પ્રેમાળ પત્ર મળ્યો, આભાર!

આપની સાધ્વીની સેક્સ એજ્યુકેશન વિશેની ચર્ચા ખૂબ જ રસપદ રહી.. આપનો સમાજ પ્રત્યેનો પ્રેમ અને સેવા ઉત્કર્ષ માટેના પ્રયાસો ખરેખર પ્રશંસાનીય છે.. સમાજ આપના આ કાર્ય માટે સદાયે ઋણી રહેશે..

વંદન!

પ્રકાશનો પ્રણામ...

તા. 2/2/2007